International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 12, December 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थान में पर्यटन उद्योग : समस्यायें एवं सुझाव

महेश कुमार

रिसर्च स्कॉलर भूगोल

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर

प्रस्तावना

पर्यटक की दृष्टि से पर्यटन मात्र आराम, मनोरंजन, संस्कृतियों तथा रीति रिवाजों की विवेचना करने वाला शब्द है परन्तु अर्थ जगत मे पर्यटन आनन्द व मनोरंजन से सम्बंधित व्यवसाय और आय का साधन है और विशेष रूप से विदेशी मुद्रा अर्जित करने का स्त्रोत भी है। सेवा क्षेत्र में आज पर्यटन ही एक मात्र ऐसा उद्योग है जिसमे पूँजीपति, प्रबन्धक, कुशल–अकुशल श्रमिक, नर्तक, संगीतज्ञ और अन्य कई वर्गो के लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

पर्यटन उद्योग की राजस्थान के आर्थिक विकास मे विशेष भूमिका है। भारत आने वाला प्रत्येक तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है। इसकी खास वजह यहाँ के मनमोहक पर्यटन स्थलों के साथ यहाँ की वह संस्कृति भी है जिसमे "पावणो" यानि मेहमानों के लिये विशेष आदर भाव है। पर्यटन की जितनी विभिन्नता राजस्थान में है उतनी किसी दूसरे प्रदेश मे नही है। इसलिये राजस्थान की भूमि के बारे मे प्रख्यात इतिहासकार डॉ. धर्मवीर भारती ने कहा था ''इस बालू भरी स्नेह सलिला राजपूतो की धरती के लिये जितना कहा जाये उतना ही कम है यहाँ तो कण–कण मे अमूल्य रत्न बिखरे पड़े हैं, किले, दुर्गो के प्रस्तरो प्राचीरों में शौर्य और तेज के अन्तहीन सूर्य झांकते नजर आते हैं''। राजस्थान की वीर गाथा के बारे में इग्लैंड़ के विख्यात कवि स्टुयार्ड किलिंग ने कहा कि ''यदि विश्व मे कोई ऐसा स्थान है जहाँ वीरो की हड्डियाँ मार्ग की धूल बनी है तो वह राजस्थान ही कहा जा सकता है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने राजस्थान भ्रमण के दौरान जो कुछ यहाँ पर देखा उसके आधार पर राजस्थान को अत्यधिक रमणीय व मुग्ध करने वाला प्रदेश बताया।

राजस्थान में पर्यटन विकास सांस्कृतिक एवम् रोजगार प्रसार दोनों दृष्टियों से एक जन उद्योग की संभावना लिये हुये महत्वाकांक्षी सांस्कृतिक एवम् व्यावसायिक कार्यक्रम ही नहीं वरन् एक अभियान भी है। इसी क्रम में राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र के बढ़ते प्रभाव को देखते हुये इसे और अधिक विस्तारित करने हेतु वर्ष 1956 में स्वतन्त्र पर्यटन विभाग की स्थापना की गई तथा पर्यटकों को पर्यटन केन्द्रों पर आवास, यातायात, भोजन एवं मनोरंजन की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 1 अप्रेल 1979 को राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड़ (आर.टी.डी.सी) का गठन किया गया,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 12, December 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिसकी प्रदेश मे कुल 77 इकाईयाँ हैं जिनमें से 39 होटल, 22 मोटल, 10 कैफेटेरिया, 3 यात्रिकाएँ यातायात ईकाई तथा वर्तमान मे 2 ट्रेन शाही रेलगाड़ी तथा एक हैरिटेज ऑन व्हील्स के नाम से चलायी जा रही है।

राजस्थान में 1978–79 में 21 प्रतिशत विदेशी पर्यटक आया करते थे। इनकी संख्या में 1992 में वृद्धि हुई और यह संख्या बढ़कर 33 प्रतिशत तक पहुंच गयी। इस प्रकार अब सामान्यतया एक तिहाई विदेशी पर्यटक राजस्थान आने लगे। पर्यटन के लिहाज से राजस्थान में वर्ष 1997 का वर्ष काफी सफल रहा था। 1997 में 62.9 लाख भारतीय एवं 6.05 लाख विदेशी पर्यटक राजस्थान आए थे। पर्यटन के बढ़ते महत्व को देखते हुये राज्य सरकार ने वर्ष 1989 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया है। वर्ष 2007 में 14.01 लाख विदेशी एवं 259.21 लाख घरेलू पर्यटक राजस्थान में आये। कुल मिलाकर वर्ष 2007 में 273.22 लाख पर्यटक राजस्थान में आये, जिनकी संख्या 2008 में बढ़कर 298.37 लाख हो गई। पर्यटन मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2010 में राजस्थान आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या 13 लाख रही है जिनकी संख्या 2017 तक बढ़कर 3.67 करोड हो गयी जिनमें 3.52 करोड स्वदेशी व 14.76 लाख विदेशी पर्यटक शामिल है।

राजस्थान में पर्यटन के क्षेत्र से जुड़ी कुछ प्रमुख समस्यायें निम्न प्रकार हैं–

भूमि की समस्या

वर्तमान समय में राजस्थान में प्रमुख पर्यटन स्थलों पर भूमि की समस्या एक गंभीर चुनौती बन गई है। पर्यटन स्थलों का विकास पर्याप्त भूमि पर निर्भर है। भूमि पर ही पर्याप्त होटलों की स्थापना तथा अन्य सुविधायें संभव है। शहरी क्षेत्रों में विकास होने के कारण भूमि उपलब्ध नहीं हो पाती जिससे पर्यटकों को सभी सुविधायें मुहैया नहीं करवाई जा सकती है। इसके अलावा भूमि की लागत भी ऊँची होने के कारण उसे खरीद पाना एक जटिल कार्य बन जाता है।

केन्द्रीय व राज्यीय बजट का अभाव

वर्तमान समय में पर्यटन ने एक उद्योग का दर्जा हासिल कर लिया है किन्तु आज भी वह अन्य उद्योग की तुलना में सरकारी उपेक्षा का शिकार बना हुआ है। पर्यटन उद्योग के विकास के लिए केन्द्र तथा राज्य दोनों सरकारों की उपेक्षा से इस उद्योग को उतना बजट आवंटन नहीं हो पाता जितना वास्तव में इसे मिलना चाहिए जिसके परिणामस्वरूप यह उद्योग आज भी विकसित अवस्था में नहीं आ पाया है।

आसान शर्तो पर ऋण का अभाव

पर्यटन उद्योग एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ अत्यधिक पूँजी की आवश्यकता पड़ती है तथा उसकी वापसी में भी अन्य उद्योगों की अपेक्षा अधिक समय लगता है। अतः इस

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 12, December 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उद्योग के लिए आसान शर्तो पर ऋण की आवश्यकता होती है। किन्तु इसके लिए विनियोजक तैयार नहीं होते क्योंकि इसमें भारी जोखिम के साथ–साथ ऋण वापसी में लम्बा इंतजार करना होता है।

लपको की समस्या

भारत में पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में लपकों की समस्या एक गंभीर समस्या है जिससे देशी–विदेशी पर्यटकों को जुझना पड़ता है। कई बार लपकों के कारण देशी–विदेशी पर्यटकों को आर्थिक हानि उठाने के साथ–साथ दुर्घटना का भी शिकार होना पड़ जाता है। इस प्रकार इस समस्या से पर्यटन उद्योग में कमी आती है।

पर्यटकों के निवास की समस्या

राजस्थान मूलतः एक ग्रामीण प्रधान राज्य है। यहाँ प्रायः पर्यटन स्थलों पर सबसे गंभीर समस्या देशी–विदेशी पर्यटकों के ठहरने की आती है क्योंकि राजस्थान में प्रमुख पर्यटन स्थल अभी अधिक विकसित नहीं हो पाये है जिसके कारण वहाँ फाइव स्टार या सेवन स्टार होटल कुछ ही स्थानों पर उपलब्ध हो पाते है। फलतः राजस्थान में पर्यटन उद्योग को पर्याप्त बढ़ावा नहीं मिल पाया है।

पार्किंग की समस्या

राजस्थान में प्रमुख पर्यटन स्थलों पर भूमि की समस्या एक जटिल समस्या है तथा वहाँ पर्यटक अपने वाहन नहीं ले जा पाते क्योंकि वहाँ प्रमुख समस्या पार्किंग की है। इस हेतु उन्हें अपने वाहन काफी दूर खड़े करने पड़ते है। इसके अतिरिक्त वाहनों में चोरी का भी भय बना रहता है। इससे राजस्थान में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा नहीं मिल पा रहा है।

परिवहन की समस्या

परिवहन का विकास पर्यटन विकास का ह्रदय माना जाता है जिसके बिना पर्यटन का विकास संभव नहीं है क्योंकि परिवहन के साधन पर्यटक की मूलभूत आवश्यकताओं में आते है। परिवहन के विकास के लिए सड़को का विकास आधुनिक सुविधाओं से युक्त बसो, कारों, स्टेशनों, वैगनो, मिनी बसों, हवाई अड्डो, एयर बसो आदि की उपलब्धि बहुत आवश्यक होती है। जबकि राजस्थान में कई शहरों तथा ग्रामीण इलाकों में सड़कों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है तथा अनेक जगहों पर सुरक्षा का भी अभाव रहता है।

प्रशिक्षित टूरिस्ट गाईडो का अभाव

देश–विदेश से आने वाला पर्यटक राजस्थान की संस्कृति तथा परंपराओं के बारे जानने के लिए ही राज्य में आता है जहाँ उसे प्रशिक्षित प्रशिक्षित टूरिस्ट गाईड की आवश्यकता होती है जिनका सभी जगह मिलना असंभव है। एक गाइड को भाषा ज्ञान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 12, December 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के साथ–साथ सामान्य ज्ञान तथा पर्यटक स्थल के इतिहास तथा वर्तमान की जानकारी होना आवश्यक है किन्तु राजस्थान में ऐसे टूरिस्ट गाईड बहुत कम संख्या में उपलब्ध है जिसके परिणामस्वरूप विदेशी पर्यटक राजस्थान की तरफ आकर्षित नहीं हो पाते।

मनोरंजन की सुविधाओं का अभाव

राजस्थान में देशी–विदेशी पर्यटक अपना मनोरंजन करने तथा यहाँ की संस्कृति एवं कला को जानने आता है किन्तु राजस्थान में मनोरंजन सुविधाओं की अपर्याप्तता होने के कारण वह राजस्थान में आने से कतराता है।

उपरोक्त विभिन्न समस्याओं को ध्यान में रखते हुए राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने व इस उद्योग के उतरोत्तर विकास हेतु शोधकर्त्ता द्वारा कुछ सुझाव दिए गए हैं जो निम्नानुसार है–

सुझाव

1. राजस्थान में पर्यटन उद्योग के विकास के लिए राज्य सरकार को पर्याप्त भूमि रियायती दरों पर उपलब्ध करवाई जानी चाहिए।
2. भारत में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र तथा राज्य स्तर पर समन्वित प्रयास किये जाने चाहिए।
3. पर्यटन के क्षेत्र में मानव संसाधन विकास पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
4. भारत में आने वाले देशी–विदेशी पर्यटकों को पर्यटन से जुड़ी पर्याप्त सूचनाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध करवाई जानी चाहिए।
5. राज्य सरकारों को निजी क्षेत्र की भागीदारी के साथ पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने हेतु क्षमता विकास पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
6. कुशल प्रबंधन तथा सुविधाओं के बल पर पर्यटकों को आकर्षित करने के प्रयास किये जाने चाहिए।
7. राज्यों में दुकानदारों, ऑटो तथा कार चालको, गाइड़ो तथा होटल कर्मचारियों को विदेशी भाषाओं के ज्ञान देने हेतु विभिन्न कोर्सेज चलाये जाने चाहिए।
8. ट्यूरिस्ट गाइड़ो हेतु प्रभावी पाठ्यक्रम का संचालन किया जाना चाहिए।
9. पर्यटक स्थलों पर जाकर विभिन्न देशी–विदेशी पर्यटकों से सर्वेक्षण के माध्यम से पर्यटन में आनी वाली समस्याओं के बारे में जानकारी ली जानी चाहिए तथा उनसे सुझाव भी मांगे जाने चाहिए।
10. युवा वर्ग को पर्यटन उद्योग में रोजगार के अवसरों से अवगत करवाकर उन्हें यह क्षेत्र अपनाने पर बल दिया जाना चाहिए।
11. भारत में सुरक्षित पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य स्तर पर प्रयास किये जाने चाहिए तथा पुलिस तथा सुरक्षा बलों का उचित प्रबंधन होना चाहिए।
12. पर्यटको के लिए पर्याप्त मेडीकल सुविधायें 24 घण्टे उपलब्ध होनी चाहिए।

13. पर्यटन स्थलों पर साफ–सफाई एवं स्वच्छता का उचित प्रबंध होना चाहिए।
14. विदेशी पर्यटकों से अधिक वसूली पर अंकुश लगाया जाना चाहिए।
15. देशी–विदेशी पर्यटकों को बेचे जाने वाले मिलावटी तथा डुप्लीकेट माल पर अंकुश लगाया जाना चाहिए।
16. पर्यटन स्थलों पर शराब तथा धूम्रपान आदि सेवन पर रोक लगानी चाहिए।
17. पर्यटकों हेतु साफ एवं स्वच्छ पानी तथा भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।
18. पर्यटन विकास के लिए उचित वित्तीय प्रबंधन अपनाना चाहिए।
19. पर्यटन विकास से जुड़ी विभिन्न योजनाओं एवं परियोजनाओं को समय पर पूरा किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि पर्यटन से किसी भी देश के गौरवपूर्ण इतिहास को सुरक्षित किया जा सकता है, बेरोजगारी से लड़ा जा सकता है, बहुत से नए रोजगार उत्पन्न किए जा सकते हैं एवं विदेशी मुद्रा में बढ़ोतरी की जा सकती है। इन सभी के अलावा देश की संस्कृति को बचाया जा सकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति पर्यटन उद्योग की समाज में महत्ता को समझे और उसके विकास के लिए प्रयास करे तथा सरकार द्वारा न केवल उच्च स्तरीय योजनाएं बनाई जाये बल्कि उनका क्रियान्वयन भी सुचारू रूप से किया जाये तो पर्यटन उद्योग से दूरगामी एवं अधिकतम लाभ प्राप्त होगा।

संदर्भ

1. एच. भीष्मपाल (2012) पर्यटकों का आकर्षण : राजस्थान'' आकृति प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली पृ.सं. 72–75
2. यादव, रघुवीर (2011) ''सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल'' चन्दा पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश पृ.सं 98–99, 104–107
3. बंसल, सुरेश चन्द्र (2011) ''पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन'' साहित्य सागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.सं. 61–63, 91–92, 274–275
4. कर्नल जेम्स टॉड़ (1988) ''राजस्थान का इतिहास'' श्याम प्रकाशन, जयपुर पृ.सं. 167–170, 178–181, 219–222
5. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा एम. (2013) ''राजस्थान का भूगोल'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृ.सं. 8, 9

6. व्यास, राजेश कुमार (2004) ''राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर (राज.) पृ.सं. 41–45, 59–63, 100–105
7. गोयल, सुनील (1985) '' पर्यटकों का स्वर्ग – राजस्थान'' गोयल ब्रदर्स, उदयपुर, पृ.सं. 7–9
8. गुप्ता, शिव सहाय (2010) ''पर्यटन के विविध स्वरूप'' मोहित बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली पृ.सं. 46–48, 73–76
9. Raina A. K., Dr. S. K. Agarwal (2004), "The Essence of Tourism Development: Dynamics, Philosophy, and Strategies", Sarup & Sons Publications, New Delhi
10. A. Satish Babu (2008), "Tourism Development in India: A Case Study", A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi.
11. Akhtar, Javed (1991), "Tourism management in India" Ashish New Delhi, (p.p 44-47)
12. Kumar Akshay (1997), "Tourism Management", Commonwealth Publishers, New Delhi.
13. Allchin B, Allichin F F and Thapar B K: Conservation of India Heritage.
14. Asif Iqbal Fazili (2006), S Husain Ashra, "Tourism in India: Planning and Development", Sarup & Sons Publications, New Delhi.
15. Bhatia A.K. (2001), "International Tourism Management", Sterling Publications, New Delhi.
16. Punia Bijender K. (2008), "Tourism Management: Problems and Prospectus", A P H Publishing Corporation, New Delhi.